

# Register.

## Mit 2. Stimmen.

|        |  |       |
|--------|--|-------|
| V.     | Ach h̄Eri/ ich habe gesündiget/ ic.                            | C. B. |
| VI.    | Liebe Seele/ du hast einen guten Vorrath.                      | C. B. |
| IX.    | Ach h̄Eri/ wie sind meiner Feinde so viel?                     | C. B. |
| X.     | Was mein Ḡott wil/ das gescheh allzeit/ ic.                   | C. T. |
| XIII.  | Siehe meine Freundin/ du bist schöne/ ic.                      | C. T. |
| XIV.   | Was siehest du aber einen Splitter in deines Bruders Auge/ ic. | C. T. |
| XVII.  | Ach h̄Eri/ straf mich nicht in deinem Zorn/ ic.                | C. B. |
| XVIII. | Ich leide billich nach meinem verdienten Lohn/ ic.             | A. B. |
| XIX.   | Maria/ gegrüsset seyst du/ ic.                                 | C. T. |
| XX.    | Wende dich h̄Err vnd sey mir gnädig/ ic.                       | A. B. |

## Mit 3. Stimmen.

|       |   |          |
|-------|---|----------|
| I.    | Ich bin die Wurzel des Geschlechtes Davids/ i.  | C. C. B. |
| II.   | Ach daß ich hören solte/ ic.                    | C. C. T. |
| III.  | h̄ERR/ fehre dich doch wieder zu vns/ ic.       | C. C. B. |
| IV.   | Gelobet seyn der h̄Erre täglich/ ic.            | C. C. T. |
| VII.  | Ach wie gar nichts sind doch alle Menschen? ic. | C. C. B. |
| VIII. | h̄Er wird wohnen in deiner Hütten? ic.          | C. C. B. |
| XI.   | O Jesu/ Du allersüssester Heyland/ ic.          | C. C. T. |
| XII.  | Miserere mei D E U S.                           | C. C. T. |
| XV.   | Ich der h̄ERR das ist Mein Nahme/ ic.           | C. C. B. |
| XVI.  | Nehmet hin vnd esset/ das ist mein Leib/ ic.    | C. C. B. |

## Mit 4. Stimmen.

|       |  |             |
|-------|--|-------------|
| XXI.  | Ach GÖTT/ warumb hast Du mein vergessen? ic. | C. C. T. B. |
| XXII. | Benedicam Dominum, &c.                       | C. C. T. B. |

E N S E